# ❋ 1 जून 2014 (13-1-78) की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❋

## ❋ ज्ञान-

1] अलौकिक बाप द्वारा प्राप्त हुई अलौकिक जीवन, अलौकिक कर्म साधारण नहीं हैं। लास्ट नम्बर के मणके को भी आज अन्त तक भक्त आत्मायें आँखों पर रखती हैं क्योंकि लास्ट नम्बर भी बापदादा के नयनों के तारे हैं। नूरे रत्न हैं। ऐसे नूरे रत्न को अब तक भी नयनों पर रखा जाता है। अपने श्रेष्ठ भाग्य को जानते हुए, वर्णन करते हुए अनजान नहीं बनो। एक बार भी मन से, सच्चे दिल से अपने को बाप का बच्चा निश्चय किया तो उस एक सेकेण्ड की महिना और प्राप्ति बहुत बड़ी है। डायरेक्ट बाप का बच्चा बनना– जानते हो कितनी बड़ी लाटरी है। एक सेकण्ड में नाम संस्कार शूद्र से ब्राह्मण हो जाता है। संसार बदल जाता- संस्कार बदल जाते, दृष्टि, वृत्ति, स्मृति सब बदल जाता एक सेकण्ड के खेल में। ऐसा श्रेष्ण सेकण्ड भूल जाते हो।

2] स्वयं को समर्पण करने से इस सेवा की लगन में यह छोटे बड़े पेपर्स या परीक्षाऐं स्वत: ही समर्पण हो जायेंगी। जैसे अग्नि के अन्दर हर वस्तु का नाम रूप बदल जाता है वैसे परीक्षा का नाम रूप बदल परीक्षा प्राप्ति का रूप बन जायेगी। माया शब्द से घबरायेंगें नहीं, सदा विजयी बनने की खुशी में नाचते रहेंगे। माया को अपनी दासी अनुभव करेंगे तो दासी सेवाधारी बनेंगी या उससे घबरायेंगे? स्वयं सरेण्डर हो जाओ सेवा में तो माया स्वत: ही सरेण्डर हो जायेगी। लेकिन सरेण्डर नहीं होते हो तो माया भी अच्छी तरह से चान्स लेती है। चान्स लेने के कारण ब्राह्मणों का भी चान्सलर बन जाती है। माया को चान्सलर बनने नहीं दो। स्वयं सेवा का चान्स ले चान्सलर बनो।

3] समय के हिसाब से हरेक को कम्पलीट होना है। कम्पलीट आत्मा कभी कम्पलेन नहीं करती है। हो ही जाता, होता ही है, यह भाषा नहीं बोलती। नया वर्ष, नई भाषा, नया अनुभव। पुरानी चीज़ सम्भालना अच्छा लगना है लेकिन यूज़ करना अच्छा नहीं होता। तो आप यूज़ क्यों करते हो?

4] संगम का समय सतयुग से श्रेष्ठ नहीं लगता है? थक गये हो क्या? जब पूछते हो विनाश कब होगा तो थके हुए हो तब तो पूछते हो। बाप का बच्चों के प्रति अति स्नेह है। बाप को यह मेला अच्छा लगता है और बच्चों को स्वर्ग अच्छा लगता है। स्वर्ग तो 21 जन्म मिलेगा ही लेकिन यह संगम नहीं मिलेगा। तो थक मत जाओ। सेवा में लग जाओ तो प्रत्यक्ष फल अनुभव करेंगे।

## ❋ योग-

1] शरीर में रहते हुए न्यारे, रूहानियत में स्थित रहेंगे। शरीर को देखते हुए भी न देखें और आत्मा जो न दिखाई देने वाली चीज़ है– वह प्रत्यक्ष दिखाई दे– यही तो कमाल है। रूहानी मस्ती में रहने वाले ही बाप को साथी बना सकते हैं क्योंकि बाप रूह है।

## ❋ धारणा-

1] यह एक्स्ट्रा टाइम स्वयं के पुरूषार्थ प्रति नहीं लेकिन दूसरों के प्रति समय, गुण और खजाना देने के लिए है। बापा ने जिस कार्य के लिए समय और खजाना दिया है अगर उसके बदले स्वयं प्रति समय और सम्पत्ति लगाते हो तो यह भी अमानत में ख्यानत होती है। यह विशेष वर्ष ब्राह्मण आत्माओं के प्रति महादानी वरदानी बनने का है।

2] जैसे बाप के आगे स्वयं को समर्पण किया वैसे अब अपना समय और सर्व प्राप्तियाँ, ज्ञान, गुण और शक्तियाँ विश्व की सेवा अर्थ समर्पण करो। जो संकल्प उठता है तो चेक करो कि विश्व सेवा प्रति है? ऐसे प्रति अर्पण होने से स्वयं सम्पन्न सहज हो जायेंगे।

3] क्यू को समाप्त करो तो परिवर्तन का समय भी समाप्त हो जायेगा।

## ❋ सेवा-

1] सदैव भक्त आत्माओं, भिखारी आत्माओं और प्यासी आत्माओं के सामने अपने को साक्षात बाप और साक्षात्कार मूर्त समझकर चलो। तीनों ही लाइन लम्बी है। इस क्यू को समाप्त करने में लग जाओ। प्यासी आत्माओं की प्यास बुझाओ। भिकारियों को दान दो। भक्तों को भक्ति का फल बाप के मिलने का मार्ग बताओ। इस क्यू को सम्पन्न करने में बिजी रहेंगे तो स्वयं के प्रति क्यों की क्यू समाप्त हो जायेगी। समय की इन्तजार में नहीं रहो लेकिन तीनों प्रकार की आत्माओं को सम्पन्न बनाने के इन्तजाम में रहो।

2] भविष्य का फल तो आपका निश्चित है ही लेकिन प्रत्यक्ष का फल का अनुभव सुख सारे कल्प में नहीं मिलेगा इसलिए भक्तों की पुकार सुनो, रहमदिल बनो, महादानी बन, महान पुण्यात्मा का पार्ट बजाओ।